StarzSpeak

Hanuman Ji Aarti

आरती कीजै हनुमान लला की।
दुष्ट दलन रघुनाथ कला की॥

जाके बल से गिरिवर कांपे।
रोग दोष जाके निकट न झांके॥

अंजनि पुत्र महा बलदाई।
सन्तन के प्रभु सदा सहाई॥

॥ आरती कीजै हनुमान.. ॥

दे बीड़ा रघुनाथ पठाए।
लंका जारि सिया सुधि लाए॥

लंका सो कोट समुद्र-सी खाई।
जात पवनसुत बार न लाई॥

॥ आरती कीजै हनुमान.. ॥

लंका जारि असुर संहारे।
सियारामजी के काज सवारे॥

लक्ष्मण मूर्छित पड़े सकारे।
आनि संजीवन प्राण उबारे॥

॥ आरती कीजै हनुमान.. ॥

पैठि पाताल तोरि जम-कारे।
अहिरावण की भुजा उखारे॥

बाएं भुजा असुरदल मारे।
दाहिने भुजा संतजन तारे॥

॥ आरती कीजै हनुमान... ॥

सुर नर मुनि आरती उतारें।
जय जय जय हनुमान उचारें॥

कंचन थार कपूर लौ छाई।
आरती करत अंजना माई॥

॥ आरती कीजै हनुमान.. ॥

जो हनुमानजी की आरती गावे।
बसि बैकुण्ठ परम पद पावे॥

॥ आरती कीजै हनुमान.. ॥
॥ इति श्री हनुमान आरती ॥